Working Paper No. 70

गरीबी उन्मूलन का रामवाण - रिंगाल उद्योग

प्रताप सिंह गढ़िया

चन्दन अधिकारी

गिरि विकास अध्ययन संस्थान
बी-४२, निरालानगर, लखनऊ २२६००७

Working Paper No. 70

गरीबी उन्मूलन का रामवाण - रिंगाल उद्योग

प्रताप सिंह गढ़िया

चन्दन अधिकारी

गिरि विकास अध्ययन संस्थान

बी-४२, निरालानगर, लखनऊ २२६००७

Working Paper No.70

गरीबी उन्मूलन का रामबाण - रिंगाल उद्योग

ξ जनपद अल्मोड़ा के विकास खण्ड कपकोट के सन्दर्भ में ξ

× प्रताप सिंह गढ़िया
× चन्दन अधिकारी

किसी देश, प्रदेश अथवा क्षेत्र विशेष के आर्थिक विकास के लिए मोटे तौर पर प्राय: यह देखा जाता है कि उसमें क्या-2 आर्थिक संसाधन विद्यमान हैं और उनके उपयोग का स्तर क्या है । प्राय: इस प्रकार के आंकलन में योजनाकार तथा सरकारी तंत्र बहु-स्तरीय दृष्टिकोण रखता है । परिणामत: बहुत से आर्थिक संसाधनों का उपयोग या तो हो ही नहीं पाता या फिर आंशिक रूप से होता है । प्रस्तुत लेख द्वारा अल्मोड़ा जनपद के एक पिछड़े विकास खण्ड कपकोट में उपलब्ध अनन्य सम्भावनाओं युक्त परन्तु अल्प विकसित रिंगाल उद्योग, जो कि आय तथा रोजगार के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है, का एक अन्तरंग विवेचन करने का प्रयास किया गया है ।

यद्यपि 1290.82 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला विकास खण्ड कपकोट प्रमुखत: कृषि प्रधान है परन्तु भौगोलिक दृष्टिकोण से इसका लगभग तीन चौथाई भाग ξ70.96 प्रतिशत ξ वनों द्वारा आच्छादित है । चूँकि विकास खण्ड कृषि प्रधान है । अत: सूक्ष्मरूप से कृषि विकास समीक्षा अपरिहार्य है । विकास खण्ड को भौगोलिक रूप से कृषि के आर्थिक एवं अनार्थिक पहलू को ध्यान में रखते हुए तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है । पर्वतीय भू-भाग ξअत्यधिक ढ़लान युक्तξ, मध्यम ढ़लान युक्त भू-भाग व घाटी क्षेत्र । पर्वतीय भू-भाग अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति, जलवायु व सिंचाई के साधनों की अनुपलब्धता के कारण कृषि के लिए प्रारम्भ से ही पूर्णत: अनार्थिक व अनुपयुक्त रहा है और यहाँ भविष्य में भी कृषि विकास की सम्भावनायें नगण्य है । मध्यम ढलान युक्त भू-भाग में जनसंख्या तथा कृषि योग्य क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से कृषि विकास की सम्भावनायें कुछ सीमा तक विद्यमान है बशर्ते कि इन क्षेत्रों में सिंचाई के साधनों का विकास

× गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ ।

व भूमि कटान को रोकने हेतु समुचित कदम उठाये जायँ । घाटी क्षेत्र मिट्टी की किस्म खेतों का आकार सिंचाई के साधन व कृषि की आधुनिक तकनीक के कारण कृषि के लिए विकास खण्ड में सबसे अधिक उपयुक्त हैं ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मध्यम ढलान युक्त भू-भाग व घाटी वाले क्षेत्र कमोवेश कृषि में आत्मनिर्भर होने की सम्भावनायें रखते हैं, लेकिन कृषि के साथ ही साथ पारम्परिक उद्योगों का संरक्षण व विकास यहाँ के निवासियों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए आवश्यक है ।

अब प्रश्न उठता है कि विकास खण्ड के पर्वतीय भू-भाग या, अत्यधिक ढलान युक्त क्षेत्र के निवासी (जिन्हें दनपुरिया कहा जाता है) जो कि न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सामाजिक, राजनैतिक व शैक्षिक रूप से भी काफी पिछड़े हैं तथा वर्तमान बहुमुखी विकास की धारा से बेखबर, नितान्त एकाकी व सादा जीवन यापन कर रहे हैं, किन-किन आर्थिक गतिविधियों द्वारा अपना आर्थिक विकास कर सकते हैं । विकास खण्ड में उपलब्ध प्राकृतिक व आर्थिक संसाधनों को ध्यान में रखते हुए कुटीर उद्योगों पर स्वत: ही ध्यान केन्द्रित हो जाता है । कुटीर उद्योगों के अन्तर्गत ऊन तथा रिंगाल उद्योग प्रमुख हैं । ये दोनों उद्योग काफी प्राचीन हैं । ऊन उद्योग में यहाँ के लोग स्वयं भेड़ व बकरी पालन द्वारा ऊन निकालकर विभिन्न प्रकार के विशिष्ट ऊनी-उत्पाद बनाते हैं जो कि अन्य स्थानों की तुलना में भिन्न होते हैं । उदाहरणात: कम्बल, ऊनी कोट पैन्ट, जूते तथा छुवैल (मोटा कम्बल जो कि 12-80 कि०ग्रा० तक भारी होता है) आदि । विगत कई वर्षों से ऊन उद्योग ह्रासोन्मुख रहा है । गांवों के नजदीक वनों का अंधाधुन्ध कटान व ऊनी-उत्पादों की उचित कीमत का न मिलना प्रमुख रूप से ऊनी-उद्योग ह्रास के लिए जिम्मेदार हैं । ऊन उद्योग के अलावा रिंगाल उद्योग में इस क्षेत्र के आर्थिक विकास की पर्याप्त सम्भावनायें विद्यमान हैं । अत: रिंगाल उद्योग जो कि क्षेत्रीय जनता के जीवनचर्या से अभिन्न रूप से जुड़ा है, के प्रकार, प्रयोग महत्व व विकास के सम्बन्ध में जानना आवश्यक है ।

विकास खण्ड में रिंगाल मुख्यत: तीन किस्म का पाया जाता है । घरेलू रिंगाल, वनरिंगाल तथा जमुर रिंगाल ।

1. घरेलू रिंगाल - इसे स्थानीय बोली में पाणि (पानी) रिंगाल के नाम से जाना जाता है । यह रिंगाल ट्रान्सप्लानटेशन विधि द्वारा घरों के आस-पास लगाया जाता है और दो तीन वर्षों में रिंगाल-उत्पाद बनाने के लिए कच्चा माल प्रदान करने के योग्य हो जाता है । इसकी कटान-छटान प्रतिवर्ष होती है और 12 से 15 वर्ष तक यह लगातार कच्चामाल उपलब्ध कराता रहता है । उपरोक्त अवधि के बाद यह स्वत: नष्ट हो जाता है और पुन: दूसरे स्थान पर आरोपण प्रक्रिया द्वारा इससे अनवरत रिंगाल प्राप्त किया जा सकता है । इस रिंगाल द्वारा निर्मित उत्पाद अन्य प्रकार के रिंगाल-उत्पादों की तुलना में कमजोर व घटिया किस्म के होते हैं ।

2. वन रिंगाल - वन रिंगाल को पोला रिंगाल भी कहा जाता है । यह रिंगाल 2000 मीटर से अधिक ऊचाई वाले पर्वतीय भागों में नैसर्गिक रूप से पैदा होता है । पोले रिंगाल की जीवनावधि भी लगभग घरेलू रिंगाल के समान ही है परन्तु इसके उत्पादों की किस्म व मजबूती घरेलू रिंगाल उत्पादों की तुलना में अच्छी होती हैं तथा इसका विक्रय मूल्य भी प्राय: अधिक होती हैं ।

3. जमुर रिंगाल - जमुर रिंगाल भी प्रकृति-प्रदत्त है और पोले रिंगाल के साथ तथा उससे भी अधिक ऊँचाई वाले स्थानों में पाया जाता है । यह रिंगाल यद्यपि मजबूती में पोले रिंगाल के समान ही होता है परन्तु पोले रिंगाल की तुलना में आकृत्ति व रंग के दृष्टिकोण से भिन्न होता है । जमुर रिंगाल द्वारा निर्मित उत्पाद भी घरेलू रिंगाल-उत्पादों के समान ही पोले रिंगाल-उत्पादों की तुलना में घटिया किस्म के होते हैं । अत: यह प्रयोग में भी कम प्रचलित हैं ।

वास्तव में रिंगाल उद्योग पर्वतीय जनता के जीवन के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा है और एक वरदान सिद्ध हुआ है । क्षेत्र में जीवन-यापन के लिए आवश्यक लगभग सभी वस्तुयें रिंगाल उद्योग से प्राप्त होती हैं । मुख्यतया रिंगाल उद्योग के उत्पादों का निम्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है ।

1- कृषि :- पर्वतीय क्षेत्रों की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति रहन-सहन व जीविकोपार्जन के साधन मैदानी क्षेत्रों से भिन्न हैं, अत: तद्नुसार यहाँ के निवासियों को भौगोलिक एवं प्राकृतिक गतिरोधों से तादात्म्य स्थापित करना पड़ता है । कृषि क्षेत्र में जीवन-यापन का प्रमुख साधन है और कृषि उपयोगी अधिकतर उपकरण रिंगाल उद्योग से प्राप्त किये जाते हैं जैसे - खेतों में खाद ‹गोबर› ढोने के लिए डलिया, ड्वक, खेतों से अनाज की वालियां लाने के लिए राब्यो ‹ ड्रम के आकार का › गेहूँ की बाल तोड़ने के लिए रूयाँठ् व अनाज की मड़ाई व सुखाने में प्रयुक्त चटाई ‹ मोस्टा › आदि ।

2- पशुपालन :- सदा हरे-भरे रहने वाले रिंगाल के वन पशुओं के चारे के लिए बहुत उपयोगी हैं । मई-जून की गर्मी में जब जानवरों के लिए घास व अन्य वनस्पतियाँ दुर्लभ होती है तब रिंगाल की हरी पत्तियों को चारे के प्रयोग में लाया जाता है । इसके अतिरिक्त रिंगाल उत्पादों ‹ड्वक् व कच्यल› का प्रयोग पशुओं के चारे व विछौना लाने के लिए भी होता है । हरे-भरे खेतों के बीच से जब जानवरों को ले जाना होता है तो उनके मुह पर रिंगाल की जाली ‹ मॉव › बांध दी जाती है । वर्षा ऋतु में छोटे नालों व नदियों से मछलियां पकड़ने के लिए भी रिंगाल का एक विशेष उपकरण ‹ग्वोदे› बनाया जाता है ।

3- घरेलू एवं अन्य उपयोग :- सभ्यता के बढ़ते चरण, नये-नये वैज्ञानिक आविष्कार तथा तकनीक भी रिंगाल उद्योग के उत्पादों का स्थान नहीं ले पाये हैं । आज भी खाद्यान रखने के उपकरण ‹ सेकुआ › कपड़ा रखने के लिए पिटार ‹ बॉक्स › आटा चावल रखने के लिए टुप्पर ‹भगौना›, रोटी रखने के लिए छाप्पर ‹रोटीदान› घर व खलिहानों में अनाज साफ करने के लिए

सूप व छलनी, घर व आंगन की सफाई के लिए झाडू, वर्षात के दिनों में गेहूँ, धान आदि खाद्यानों को आग द्वारा सुखाने के लिए विशाव ॥बड़े परात की तरह॥ आदि घरेलू उत्पाद रिंगाल द्वारा बनते हैं । मेहमान-नवाजी के लिए छोटी चटाई॥ तेहत् ॥ दीवालों पर सजावट के लिए विभिन्न कलाकृतियाँ, तम्बाकू पीने की नली, वर्षात से बचने के लिए छतरी ॥मौण्ण॥ धूप से बचाव हेतु टोप, बच्चों का पालना दुल्हन की डोली की सजावट का सामान व बूढ़े की लाठी आदि भी रिंगाल की देन है । इसके अतिरिक्त क्षेत्र में पारम्परिक रूप से चले आये उन उद्योग के आवश्यक उपकरण आदि भी रिंगाल से प्राप्त किये जाते हैं ।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रिंगाल उद्योग का विकास खण्ड की अर्थव्यवस्था में विशिष्ट आर्थिक महत्व है । आर्थिक महत्व के अतिरिक्त इसके पर्यावरणीय महत्व को भी नजर-अन्दाज नहीं किया जा सकता । पर्वतीय क्षेत्र में विगत कई वर्षों से भू-स्खलन की समस्या भीषण रूप धारण कर चुकी है और वर्ष 1983-84 में विकास खण्ड के फर्सी गांव में 37 लोग, तोली गांव में 10 लोग व कई अवेशती वर्षात में इसके शिकार हो चुके हैं । रिंगाल न केवल भूस्खलन रोकता है बल्कि सदाबहार प्रजाति की वनस्पति होने से सदा हरियाली बिखेरता है । रिंगाल के प्रकार, उत्पाद, प्रयोग व महत्व के सूक्ष्म विवेचन के उपरान्त इस उद्योग की मौजूदा स्थिति, समस्यायें व सम्भावनाओं पर प्रकाश डालना आवश्यक है ।

वर्तमान में इस क्षेत्र में रिंगाल उद्योग की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है । यह उद्योग कई समस्याओं से गुजर रहा है । सबसे पहली समस्या यह है कि इस उद्योग का केन्द्रीयकरण कुछ ही प्रभावशाली लोगों के हाथों में हो गया है जो कि सभी सम्भव आर्थिक लाभ पूंजीवादी उत्पादन प्रक्रिया के द्वारा प्राप्त कर रहे हैं । जनसाधारण आज तक अपनी अशिक्षा व निर्धनता के कारण व उत्पादन की ठेकेदारी प्रथा के कारण रिंगाल उद्योग के आर्थिक लाभ पूर्णतः प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं । दूसरी तरफ ठेकेदार लोग निर्धन कुशल कारीगरों द्वारा निर्मित रिंगाल उत्पादों को जनपद ....

के विभिन्न नगरों में ऊंची कीमतों पर बेचकर जहाँ एक ओर अत्यधिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर शोषण व दुलर्भता का बाजार भी विकसित कर रहे हैं ।

दूसरी समस्या जिससे कि रिंगाल उद्योग ग्रसित है, वह है रिंगाल का अविवेकपूर्ण व अनार्थिक कटान । विकास खण्ड के घाटी व मध्यम ढलान वाले क्षेत्रों के लोग अपने यहाँ चारागाहों की कमी के कारण मई-जून से अगस्त-सितम्बर तक की अवधि के दौरान अपने पशुओं को पर्वतीय भाग के जंगलों की तरफ ले जाते हैं और अस्थायी निवास झोपड़ी बनाने के लिए रिंगाल का अविवेकपूर्ण कटान करते हैं और इसके अतिरिक्त स्थानीय लोग भी मकान की छत बनाने में रिंगाल का कटान करते हैं ।

उपरोक्त दो समस्यायें जहाँ जनता द्वारा खुद पैदा की गई हैं तीसरी समस्या के लिए सरकारी क्षेत्र यानि कि जंगलात विभाग उत्तरदायी है, जंगलात कर्मचारियों की उदासीनता व्यक्तिगत स्वार्थ व स्वार्थी तत्वों को प्रश्रय देने की नीति से रिंगाल का अंधाधुन्ध कटान हो रहा है और क्षेत्र-वासी आर्थिक व पर्यावरणीय संकट से गुजर रहे हैं ।

रिंगाल के अविवेकपूर्ण कटान के गम्भीर आर्थिक एवं सामाजिक दुष्परिणाम है जिनका सीधा प्रभाव क्षेत्र वासियों पर पड़ता है । अधिकतर क्षेत्र-वासी जिनको कि रिंगाल द्वारा आय एवं रोजगार प्राप्त होता था आज बेकारी की स्थिति में है और बाध्य होकर बच्चे व नवजवान शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं । ये प्रवासी लोग शहरों में मजबूरन बहुत छोटे-छोटे कार्यों जैसे कि होटलों एवं घरों में किये जाने वाले कार्य,असंगठित क्षेत्र में फैले अनेकानेक आर्थिक गतिविधियों चौकीदारी आदि में लगे हैं । दूसरी ओर घरों में रहने वाले वृद्ध एवं महिलायें सुदूर क्षेत्रों में उपलब्ध रिंगाल को लाने में असमर्थ हैं और किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में है । रिंगाल-उत्पादों की ठेकेदारी पद्धति जो कि मूलत: अधिकतम लाभ कमाने के उद्देश्य पर आधारित होती है दोषपूर्ण वननीति द्वारा माँग व पूर्ति की शक्तियों

में असामन्जस्य होने से उत्पादों की कीमतें बढ़ गयी हैं जिससे कि लोगों की वास्तविक आय कुप्रभावित हुई है ।

अब प्रश्न उठता है कि जहाँ ऊन उद्योग अन्तिम सासें ले रहा है, कृषि प्रारम्भ से ही अनार्थिक रही है बड़े उद्योगों की सम्भावनायें नगण्य है ऐसी स्थिति में क्षेत्र की जनसंख्या को अपने जीविका के साधन उपलब्ध कराने, स्थानीय नवयुवकों के पलायन को रोकने एवं पर्यावरण का सन्तुलन बनाये रखने की दिशा में रिंगाल उद्योग रामबाण सिद्ध हो सकता है । यहाँ पर यह बताना भी अनावश्यक न होगा कि रिंगाल उत्पादों की आज भी क्षेत्र व क्षेत्र के बाहर अत्यधिक माँग है क्योंकि रिंगाल उत्पादों का विकल्प आधुनिक तकनीक द्वारा निर्मित साधनअपनी ऊँची कीमतों के कारण तथा विशिष्ट क्षेत्रीय रहन-सहन व संस्कृति के कारण ले ही नहीं सकते, अतः आवश्यकता इस बात की है कि रिंगाल उद्योग के विकास को क्षेत्रीय विकास की रणनीति में सर्वोपरि स्थान दिया जाय और नये सिरे से बड़े पैमाने पर समूचे क्षेत्र में रिंगाल लगाने का आन्दोलन चलाया जाय । जहाँ बड़े पैमाने पर रिंगाल लगाने की आवश्यकता है उसके बचाव की भी उससे कम आवश्यकता नहीं है । इसके लिए सरकारी तंत्र व क्षेत्रीय जनता दोनों की जिम्मेदारियां समान रूप से हैं । एक बार जब बन विभाग व स्थानीय लोग रिंगाल रोपण व कटान का कार्य विवेकपूर्ण व ईमानदारी से कर लें, उसके बाद विकास खण्ड स्तर पर ग्रामीण विकास कार्यक्रम के तहत् रिंगाल उद्योग को एक इकाई के रूप में लेकर उसके लाभों को जनसामान्य तक पहुँचाना चाहिए । इसके लिए लोगों को रिंगाल लगाने के लिए आर्थिक सहायता, अनुदान व खादी ग्रामोद्योग कमीशन के सहयोग से रिंगाल उत्पादों को बनाने व उनके विपणन की सुविधाएँ प्रदान की जाय । रिंगाल उद्योग के विकास से सम्बन्धित विभिन्न प्रयासों को बड़े पैमाने पर प्रचार द्वारा जन जागृति पैदा की जाय । सरकारी प्रयासों के अतिरिक्त स्वयं सेवी संस्थायें भी इस दिशा में महान समाज सेवी स्वर्गीया

सरला बहन व राधा बहन द्वारा हिंम दर्शन कुटीर धरम घर में चलाये गये कार्यक्रम से प्रेरित होकर रिंगाल उद्योग के विकास को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं ।